प्रश्नः

''यदि अनुग्रह से गिरना सम्भव है, तो मसीही व्यक्ति को कैसे आशा हो सकती है?''

उत्तरः

हम सिखाते हैं कि एक मसीही का अनुग्रह से गिरना सम्भव है। दूसरे बहुत से लोग यह सिखाते हैं कि मसीही व्यक्ति के लिए अनुग्रह से गिरना असम्भव है। एक प्रसिद्ध साम्प्रदायिक कलीसिया की स्थानीय मण्डली ने अपने विश्वास की सूची में निम्नलिखित बातें शामिल कीं: ''हम ... विश्वासी लोगों के अनन्त को मानते हैं! मतलब यह कि परमेश्वर के परिवार में जन्म लेने वाले का कभी नाश होना असम्भव है।'' जो लोग विश्वास से गिरने की सम्भावना को नहीं मानते वे पूछते हैं: ''यदि आप मानते हैं कि नया जन्म पाया हुआ व्यक्ति स्वर्ग के अपने घर से वंचित हो सकता है, तो आपको उद्धार का कोई आश्वासन कैसे मिल सकता है?''

वास्तव में, विश्वास से गिरने की सम्भावना हमारी हैरानी का कारण बन सकती है कि हम अपने उद्धार के प्रति आश्वस्त कैसे हो सकते हैं। हम गीत गाते हैं ''यीशु है मेरा कैसा खुशहाल'' परन्तु हो सकता है कि आश्वासन के बजाय हमें संदेह अधिक हो। हो सकता है कि हम इस आशंका से हैरान हों, ''क्या परमेश्वर मेरे पापों को क्षमा करेगा भी?''; ''क्या मैं उद्धार पाने की पूरी कोशिश कर रहा हूं''; ''यदि इसी समय मैं मर जाऊं तो क्या मैं स्वर्ग में जाऊंगा?'' यदि हमसे पूछा जाए कि हम स्वर्ग मैं जाएंगे या नहीं, तो शायद हम कहें ''उम्मीद है कि मैं जाऊंगा'' या ''लगता है कि जाऊंगा।'' हो सकता है कि हमारी भाषा से लगे कि हमें पूरा यकीन नहीं है।

यह मानकर कि विश्वास से गिरना सम्भव है, हम ऐसी भावनाओं से कैसे उबर सकते हैं? हम पूरे यकीन से कैसे कह सकते हैं?

मसीही लोग सचमुच अनुग्रह से गिर सकते हैं

सचमुच मसीही लोग अनुग्रह से गिर सकते हैं। हम ऐसा ज़्यों कहते हैं? ज़्योंकि बाइबल ऐसा बताती है।

अनुग्रह से गिरना सज़्भव है। मसीही लोगों को अनुग्रह से गिरने के विरुद्ध चौकस किया गया है: ''इसलिए जो समझता है कि मैं स्थिर हूं, वह चौकस रहे; कि कहीं गिर न पड़े'' (1 कुरिन्थियों 10:12)। यहां तक कि पौलुस ने भी कहा है कि वह भी गिर सकता था (1 कुरिन्थियों 9:27)।

अनुग्रह से गिरना एक वास्तविकता है और इसका भयानक खतरा है: ''ज़्योंकि जिन्होंने एक बार ज्योति पाई है, और जो स्वर्गीय बरदान का स्वाद चख चुके हैं और पवित्र आत्मा के भागी हो गए हैं। और परमेश्वर के उज़म वचन का और आने वाले युग की सामर्थों का स्वाद चख चुके हैं। यदि वे भटक जाएं; तो उन्हें मन फिराव के लिए फिर नया बनाना अनहोना है ...'' (इब्रानियों 6:4-6)। भटकने से पहले इन लोगों का उद्धार हो चुका था, ज़्योंकि, पांच विशेषताओं में से दो का उल्लेख करें, तो उन्होंने ज्योति पा ली थी और पवित्र आत्मा के भागी हो गए थे और यह बात केवल उन लोगों के लिए कही जा सकती है जो मसीही थे या हैं।

अनुग्रह से गिरना एक तथ्य है। गलतियों 5:4 कहता है, ''तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो।'' इससे न केवल अनुग्रह से गिरने की सज़्भावना का बल्कि गिरने की वास्तविकता का भी पता चलता है। कुछ लोग अनुग्रह से गिर गए थे!

अनुग्रह से गिरना विनाश की ओर ले जाता है। याकूब कहता है, ''हे मेरे भाइयो, यदि तुम में कोई सत्य के मार्ग से भटक जाए, और कोई उस को फेर लाए। तो वह यह जान ले, कि जो कोई किसी भटके हुए पापी को फेर लाएगा, वह एक प्राण को मृत्यु से बचाएगा ...'' (याकूब 5:19, 20)। याकूब मसीही लोगों (भाइयों) को लिख रहा था। उसने कहा कि मसीही लोग पाप में पड़ सकते हैं (या सत्य से भटक सकते हैं) अर्थात वे फिर सकते थे या बदल सकते थे। ऐसा होने पर, पापी को बचाने वाला व्यज़्ति उसे मृत्यु से बचाता है। इसलिए उसके पाप ने उसे मृत्यु के लिए दोषी ठहराया था।

मसीही लोग पाप में पड़ सकते हैं; वे अनुग्रह से गिर सकते हैं; वे ऐसा पाप कर सकते हैं जिससे उनका सदा के लिए नाश हो जाएगा। विश्वास से गिरना एक वास्तविक सज़्भावना है।

मसीही लोगों को आश्वासन मिल सकता है

पहली बात, हमें आश्वासन मिल सकता है ज़्योंकि हमें विश्वास हो सकता है कि हमारा उद्धार हुआ था। नये नियम में उद्धार का मार्ग बड़ी स्पष्टता से बताया गया था। हमारा उद्धार अनुग्रह से (इफिसियों 2:8, 9) मसीह के लहू के द्वारा होता है (इफिसियों 1:7)। उद्धार पाने के लिए हमारे लिए यह विश्वास करना आवश्यक है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है और हमारा उद्धारकर्ज़ा है और उसमें अपने विश्वास का अंगीकार करने के लिए तैयार

होना आवश्यक है (रोमियों 10:9, 10)। हमारे लिए मन फिराना या अपने पापों से मुड़ना भी आवश्यक है (लूका 13:3; प्रेरितों 17:30)। और फिर उद्धार पाने के लिए बपतिस्मा लेना आवश्यक है (प्रेरितों 2:38; 22:16)।

यह करने के बाद, हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि हमारा उद्धार हुआ है। विश्वास और मन फिराकर बपतिस्मा लेने से पाप क्षमा होते हैं (प्रेरितों 2:38) ... पाप धोए जाते हैं (प्रेरितों 22:16) ... उद्धार होता है (1 पतरस 3:21) ... मसीह में प्रवेश कर मसीह को पहना जाता है (गलतियों 3:27)।

नये नियम के लेखकों ने मसीही लोगों के नाम लिखते हुए, इस तथ्य के विषय में ज़रा भी संदेह नहीं किया कि जिन लोगों के नाम वे लिखते थे, उनका उद्धार हो चुका था। पौलुस ने गलतियों के लोगों को बताया: ''ज़्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है'' (गलातियों 3:26, 27)। कुलुस्सियों के नाम पत्री में उसने लिखा, ''उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया। जिस में हमें छुटकारा अर्थात पापों की क्षमा प्राप्त होती है'' (कुलुस्सियों 1:13, 14)। पतरस ने कहा कि जिन लोगों के नाम उसने लिखा उन्होंने ''नया जन्म'' पाया हुआ था (1 पतरस 1:3) और बाद में लिखा, ''तुम ने भाईचारे की निष्कपट प्रीति के निमिज़ सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है, ... ज़्योंकि तुमने नाशमान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरने वाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है'' (1 पतरस 1:22, 23)। यूहन्ना ने लिखा, ''देज़ो पिता ने हमसे कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं, ...'' (1 यूहन्ना 3:1)।

यदि नये नियम के मसीहियों को ऐसा आश्वासन मिला था कि उनका उद्धार हो चुका है, तो हमें भी वही आश्वासन मिलना चाहिए। यदि हमने सुसमाचार की आज्ञा मानी है, यदि हमने विश्वास करके, मन फिराया, अपने विश्वास का अंगीकार किया और पापों की क्षमा के लिए डुबकी ली थी, तो हम बिना किसी संदेह के यकीन से कह सकते हैं कि हमारा उद्धार हो गया था! हम कह सकते हैं कि मेरा उद्धार हो चुका है। मैंने नया जन्म पा लिया है। मैं परमेश्वर की संतान बन गया हूं। मैं कलीसिया का सदस्य और परमेश्वर के राज्य का नागरिक बन गया हूं।

उस विशेष घटना की ओर ध्यान दिलाने के योग्य होने के कारण जब हमने आज्ञा मानने के लिए कुछ किया था, तो हमें वास्तव में उन लोगों से बढ़कर कुछ लाभ मिलता है जो यह मानते हैं कि लोगों का उद्धार ''केवल विश्वास'' से ही होता है। बहुत से लोगों का मानना है कि मसीह को ग्रहण करते ही या ''अपने मन में मसीह को आने'' की अनुमति देते ही व्यज़्ति का उद्धार हो जाता है। पर उनके पास उद्धार पाने का एकमात्र प्रमाण यह है कि वे उस क्षण को जिसमें उन्होंने ''मसीह को ग्रहण किया'' था, अपने उद्धार के क्षण के रूप में याद करते हैं। इस कारण बाद में पाप करने पर यह संदेह होना आसान है कि उसका उद्धार हुआ भी था या नहीं।

पर यह पज़्का जानने के लिए कि हमने सचमुच ''मसीह को अपने मनों में ग्रहण किया'' है हम अपनी धुंधली सी याद पर निर्भर नहीं हैं; हमें केवल इतना ही याद रखने की आवश्यकता है कि अपने जीवन की किस तिथि को हमने मसीह में बपतिस्मा लिया था और उद्धार पाया था।

इसलिए, नये नियम की शिक्षा के अनुसार हमारा उद्धार सुसमाचार की आज्ञा मानने के समय होता है, बाइबल से बाहर के विचार कि हमारा उद्धार ''मसीह को ग्रहण करने'' या ''मसीह को अपने मन में जगह देने'' के समय होता है, की अपेक्षा अधिक मज़बूत है।

दूसरा, हम आश्वस्त हो सकते हैं ज़्योंकि हमें यकीन है कि हमारा उद्धार हो रहा है। हमें यह मानना पड़ेगा कि हम मानते हैं कि मसीही व्यज़्ति अनुग्रह से गिर सकता है, इसलिए पूरा यकीन होना कि हमारा उद्धार पिछले किसी समय में हुआ था आज हमें किसी प्रकार का ऐसा कोई आश्वासन नहीं देता जिसकी हमें आवश्यकता है। ऐसा तो हो सकता है कि पिछले किसी समय में हमारा उद्धार हुआ हो पर आज हम भटक गए हों। हम कैसे यकीन से कह सकते हैं कि अब हम उद्धार पाए हुए हैं ? कम से कम दो कारणों से हम यकीन से कह सकते हैं कि आज हम उद्धार पाए हुए हैं।

परमेश्वर द्वारा हमें विश्वासी रखने के लिए किए गए काम के कारण हम यकीन से कह सकते हैं। परमेश्वर नहीं चाहता कि हम उससे फिर जाएं। इसलिए वह हमें विश्वासी बनाए रखने के लिए हमारी हर आवश्यकता को पूरा करता है। उसने अपने बच्चों को दिया है:

एक प्रेमी पिता। ''देज़ो पिता ने हमसे कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं ...'' (1 यूहन्ना 3:1)।

हमारी सिफ़ारिश करने के लिए एक सहायक। ''... और यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात धार्मिक यीशु मसीह'' (1 यूहन्ना 2:1)। मसीह परमेश्वर के पास हमारा मध्यस्थ है (1 तीमुथियुस 2:5)।

एक पवित्र मेहमान। ''और तुम जो पुत्र हो, इसलिए परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो हे अज़्बा, हे पिता कहकर पुकारता है, हमारे हृदय में भेजा है'' (गलातियों 4:6; तु. प्रेरितों 2:38; 5:32)। पवित्र आत्मा का वास हमारी मीरास के बयाने के रूप में (इफिसियों 1:13, 14), हमें सामर्थ देने के लिए (इफिसियों 3:16) और हमें आत्मा के फल लाने के योग्य बनाने के लिए (गलतियों 5:22, 23) दिया गया है।

उत्साहित करने वाली संगति। परमेश्वर ने हमें कलीसिया में मिलाया है (प्रेरितों 2:47) जो विश्वास करने वालों की एक संगति है, ताकि हम इसके सदस्यों की विश्वासी बने रहने में सहायता करें। कलीसिया में हम ''एक दूसरे के साथ इकट्ठे'' होकर ''प्रेम, और भले कामों में उकसाने'' के लिए ''एक दूसरे के साथ इकट्ठे'' होकर ''एक दूसरे को समझाते हैं'' (इब्रानियों 10:24, 25)।

एक सहायक संदेश। बाइबल में ''अनुग्रह के वचन'' हैं जो ''तुज़्हारी उन्नति कर सकते हैं, और सब पवित्रों में साझी करके मीरास दे सकता है'' (प्रेरितों 20:32)। यह हमें यीशु में अद्भुत उदाहरण देकर और धार्मिक जीवन के लिए शज़्तिशाली प्रेरणा देकर, स्पष्ट निर्देश देता है।

स्वर्गीय सेवक। स्वर्गदूत, ''सेवा टहल करने वाली आत्माएं हैं; जो उद्धार पाने वालों के

लिए सेवा करने को भेजी जाती हैं'' (इब्रानियों 1:14)। ये उद्धार पाने वाले हम ही तो हैं! स्वर्गदूत हमारी ओर से सेवा करते हैं।

प्रार्थना का सौभाग्य। यीशु ने हमसे कहा, ''मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा। ढूंढ़ो, तो तुम पाओगे। खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा'' (मत्ती 7:7; तु. 1 यूहन्ना 5:15)। मसीही लोगों से प्रार्थना का जवाब मिलने की प्रतिज्ञा की गई है!

बहुमूल्य प्रतिज्ञाएं। परमेश्वर ने हमें उत्साहित करने और विश्वास में बने रहने के लिए प्रतिज्ञाएं दी हैं, इन प्रतिज्ञाओं में यह प्रतिज्ञा भी शामिल है कि सब वस्तुएं मिलकर मसीही लोगों का भला ही करती हैं (रोमियों 8:28), कि परमेश्वर हमें हमारी सामर्थ से अधिक परीक्षा में नहीं पड़ने देगा (1 कुरिन्थियों 10:13), और यह कि संसार में हमें परमेश्वर के प्रेम से कोई चीज़ अलग नहीं कर सकती (रोमियों 8:35-39)।

हमें यकीन हो सकता है कि जब हम परमेश्वर की शर्तों को पूरा नहीं कर पाते तो वह हमारी क्षमा के लिए प्रबन्ध करता है।

एक अर्थ में उद्धार में स्थिर रहना हम पर निर्भर करता है। परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए हमें पूरी कोशिश करनी चाहिए। पर ज़्या इसका अर्थ यह हुआ कि हम अपनी क्षमता या योग्यता से मसीही बने हैं? नहीं। ज़्योंकि परमेश्वर हमारे लिए ऐसी सहायता उपलज़्ध करवाता है जिससे हम जोश में आ सकें, परिश्रम करें और विश्वासी बने रहें।

पर हमारा यह भरोसा केवल हमारे विश्वासी रहने के लिए किए गए परमेश्वर के प्रबन्धों पर ही नहीं बल्कि इस तथ्य पर भी आधारित है कि परमेश्वर ने हमारे पापों की क्षमा के लिए उस समय प्रबन्ध किया जब हम उसकी इच्छा को पूरा नहीं कर सकते हैं। विशेष तौर पर, हमें यह प्रतिज्ञा दी गई है कि यीशु का लहू हमारे पापों को धोता है: ''पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं; और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है'' (1 यूहन्ना 1:7)। हम अपने उद्धार के विषय में आश्वस्त हो सकते हैं, इसलिए नहीं कि हमारे जीवन में कोई पाप नहीं है बल्कि इसलिए कि यीशु का लहू हमें लगातार हमारे पापों से शुद्ध करता है!

यह अच्छी बात है कि अपने पाप रहित होने, पूरी तरह से परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करने के लिए हम अपनी धार्मिकता पर निर्भर नहीं हैं। यदि होते तो हम में से किसी का भी उद्धार न होता ज़्योंकि हम में से किसी का भी जीवन पाप रहित नहीं है! हम अपने आप पर निर्भर नहीं रह सकते हैं। क्षमा पाने के लिए हमें परमेश्वर पर ही निर्भर होना पड़ेगा। पर परमेश्वर का धन्यवाद हो कि वह हम पर अपना अनुग्रह करता है। ज्योति में चलते रहने के कारण परमेश्वर के अनुग्रह और यीशु के लहू के द्वारा हमारा उद्धार होता रहता है।

इस सबका ज़्या अर्थ है? इसका अर्थ है कि *हमें पता चल सकता है कि हमारा उद्धार अभी और यहीं हुआ है!* यह विचार कि आप कभी अपने उद्धार होने की बात नहीं कह सकते नये नियम का नहीं है। यूहन्ना ने लिखा है, ''मैंने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिए लिखा है; कि तुम जानो, कि अनन्त जीवन तुम्हारा है'' (1 यूहन्ना 5:13)। स्पष्टतया, यह प्रतिज्ञा बिना शर्त *नहीं* है, परन्तु यूहन्ना के अनुसार, यह

भी स्पष्ट है कि हम *जान सकते हैं* कि अनन्त जीवन हमारा है; इसलिए हम *जान सकते हैं* कि इस समय हमें उद्धार मिला हुआ है। यदि आपसे कोई पूछे कि ''ज़्या आपका उद्धार हुआ है?'' तो यदि आप विश्वास में बने रहकर जीवन बिताने की पूरी कोशिश कर रहे हैं, तो आप उसे उज़र दे सकते हैं, ''हां! मैं जानता हूं कि मेरा उद्धार हो गया है!''

हम आश्वस्त हो सकते हैं ज़्योंकि हम यकीन से कह सकते हैं कि हमारा उद्धार हो जाएगा। यदि हम मानते भी हों कि अब हमारा उद्धार हो गया है, तो हम यह यकीन से नहीं कह सकते कि अनन्तकाल में हमारा उद्धार होगा या नहीं। हम हिचकिचाते हुए कहेंगे, ''मृत्यु के बाद, मेरा उद्धार हो जाएगा,'' या ''मैं स्वर्ग में जाऊंगा। इसमें कोई संदेह नहीं है!''

अपने अनन्त उद्धार के बारे में पौलुस को कोई संदेह नहीं था। अपने जीवन के अन्त में उसने बड़ी दिलेरी से कहा था:

> ... मेरे कूच का समय आ पहुंचा है। मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैं ने विश्वास की रखवाली की है। भविष्य में मेरे लिए धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी, और न्यायी है मुझे उस दिन देगा और मुझे ही नहीं, बरन उन सब को भी, जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं (2 तीमुथियुस 4:6-8)।

ध्यान दें कि पौलुस ने यह नहीं कहा कि उसे केवल अपने बारे में ही दिलेरी है; उसने कहा कि ''उन सबको भी, जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं'' अनन्त उद्धार का वही आश्वासन मिल सकता है।

पर स्वर्ग में जाने के विषय में हम इतने यकीन से कैसे कह सकते हैं? ज़्या अनन्त जीवन का आश्वासन पाने से पहले हमारे जीवन पाप रहित होने आवश्यक हैं? यदि ऐसा हो तो हमें कोई आश्वासन कैसे मिल सकता है, ज़्योंकि हम सब तो पाप करते हैं? स्वर्ग में जाने के आश्वासन का एक मात्र ढंग परमेश्वर का अनुग्रह ही है। उदाहरण के लिए, पौलुस ने उनेसिफुरुस नामक एक आदमी के बारे में कहा, ''उनेसिफुरुस के घराने पर प्रभु दया करे, ज़्योंकि उस ने बहुत बार मेरे जी को ठंडा किया, ... (प्रभु करे, कि उस दिन उस पर प्रभु की दया हो)। ...'' (2 तीमुथियुस 1:16, 18)। उनेसिफुरुस को इतना भला होने के बावजूद प्रभु के दिन अनुग्रह या दया की आवश्यकता होगी। सभी को ऐसे ही प्रभु के अनुग्रह की आवश्यकता होगी। अच्छी खबर यह है कि जैसे उनेसिफुरुस पर प्रभु की दया होनी थी वैसे ही उस महान दिन हम पर यह दया होगी! मसीह के लिए हम जो भी कर सकते हैं वह करने के बावजूद निकज़्मे दास ही हैं! हम में फिर भी कमी रह ही जाएगी, पर उस कमी को परमेश्वर के अनुग्रह से दूर किया जाएगा!

सारांश

ज़्या हम ''यीशु है मेरा कैसा खुशहाल'' गीत गाकर सचमुच आश्वासन पा सकते हैं, चाहे हमारा यह विश्वास हो कि एक मसीही अनुग्रह से गिर सकता है? बेशक हम गा सकते हैं ज़्योंकि हम यकीन से कह सकते हैं कि बीते समय में हमारा उद्धार हुआ था, हर रोज

हमारा उद्धार हो रहा है और स्वर्ग में सदा के लिए हमारा उद्धार होगा।

इसका अर्थ बेशक यह नहीं है कि हम अपने उद्धार के प्रति उदासीन हो सकते हैं। हमें अभी भी ज्योति में चलना (1 यूहन्ना 1:7), अपने बुलाए जाने और चुने होने को पज़्का करने के लिए यत्न करते हुए (2 पतरस 1:10) और मृत्यु तक विश्वासी बने रहने की पूरी कोशिश करनी (प्रकाशितवाज़्य 2:10) आवश्यक है। जो मसीही व्यज़्ति संसार में वापस चला गया है या उसने अपने विश्वास को त्याग दिया है वह पवित्र शास्त्र से किसी प्रकार का आश्वासन नहीं पा सकता जिसके बारे में हमने विचार किया है।

पर यदि आप पूरी कोशिश कर रहे हैं, तो परमेश्वर की संतान होने के कारण आपके लिए बहुत बड़ा आश्वासन है।

मैं इसे इस तरह से समझाता हूं: जब मैं छोटा बच्चा था तो अपने पिता के आस पास होने पर मुझे कभी भय नहीं होता था। उनका कद केवल छह फुट से थोड़ा कम और भार 135 पौंड था, मेरे लिए वह कोई भी मुश्किल सह सकते थे और कोई भी खतरा मोल ले सकते थे। इसके अलावा, मुझे मालूम था कि वह मुझसे प्रेम करते हैं और जो कुछ मेरी भलाई के लिए आवश्यक हो करेंगे। सो डैडी के साथ रहते हुए मुझे किसी किस्म का कोई भय नहीं था। इसके बजाय मुझ में एक अजीब सी दिलेरी का अहसास होता था। बड़ा होने पर भी मैं डैडी को सामर्थ के ऐसे स्तज़्भ के रूप में मानता था जिस पर मैं हमेशा भरोसा कर सकूं। बाकी सब बदल जाने के बावजूद, उनकी उपस्थिति, उनके मूल्य, और मेरे जीवन में उनका प्रेम वैसे ही थे। इससे मुझे दिलेरी मिलती है। बेशक उस प्रेम और देखभाल में अनुशासन भी था। पर मैं जानता था कि मेरी हर गलती की क्षमा मिल जाएगी। इसमें भी भरोसा था। मुझे मालूम होता था कि यदि मैं सही मार्ग से बहुत दूर भटक जाऊं तो भी मेरे डैड मुझे प्रेम करना नहीं छोड़ेंगे। बल्कि उनका पुत्र होने के मुझे सभी लाभ मिलेंगे। मेरे साथ उनकी इतनी भलाई और इतना कुछ मुझे देने पर भी, मैं कभी उतना नहीं कर पाया।

यदि अच्छे पिता का एक पुत्र को इतना लाभ हो सकता है, तो हमारे पिता के रूप में परमेश्वर से हमें कितना अधिक आश्वासन मिलेगा (मज़ी 7:9-11) ? हम मान सकते हैं कि हमारा परमेश्वर, मेरे डैडी की तरह नहीं बल्कि उससे भी कहीं अधिक हमारी भलाई चाहता है, हमारी देखभाल करता है, इतना शज़्तिशाली है कि हमारी किसी भी समस्या का समाधान कर सकता है, और जीवन की सभी परिस्थितियों में वह नहीं बदलता। ज़्या यह सचमुच में अद्‌भुत आश्वासन नहीं है ?

हम गलती करके उसे नाराज करते हैं तो भी वह हमें क्षमा करने को तैयार रहता है। यदि हम बहुत दूर तक भटक भी जाएं और अपने पिता के निर्देशों को पूरी तरह से नकार दें, तो भी वह हमें प्रेम करना नहीं छोड़ेगा बल्कि हमें पुत्र होने के लाभ देगा।

हां, परमेश्वर हमारा पिता है; हम उसका परिवार हैं ! यही आश्वासन है !

यदि आप मसीही नहीं हैं, तो विश्वास और आज्ञा मानने के द्वारा परमेश्वर की संतान बनकर आप भी यही आश्वासन पा सकते हैं (गलातियों 3:26, 27)।